ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 15 कुल पृष्ठ-4 30 जुलाई से 5 अगस्त, 2020 दयानन्दाब्द 197 सृष्टि सम्वत् 1960853121 सम्वत् 2077 आ. कृ.-01

स्वाध्याय पर्व श्रावणी का महात्म्य

- स्वामी आर्यवेश

पर्व हमारी भावनात्मक एकता, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक हैं। पर्वों की लम्बी परम्परा में श्रावणी महापर्व का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वैदिक परम्परा के अनुसार इस पर्व का सम्बन्ध स्वाध्याय और वेदाध्ययन से है। श्रावण नक्षत्र की पूर्णिमा को मनाने के कारण इसे श्रावणी कहते हैं। श्रवण का अर्थ होता है सुनना। वेदों, उपनिषदों व धर्मग्रन्थों का सुनना और सुनाना श्रवण कर्म कहलाता है। स्वाध्याय मानव के जीवन का प्रमुख कर्त्तव्य बताया गया है। स्वाध्याय का अर्थ होता है आत्मचिन्तन और वेद तथा श्रेष्ठ जीवन निर्माण करने वाली पुस्तकों का पढ़ना और पढ़े हुए या सुने हुए को अपने जीवन में धारण कर लेना।

शतपथ ब्राह्मण में स्वाध्याय के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा गया कि स्वाध्याय करने वाला सुख की नींद सोता है। युक्तमना होता है। अपना परम चिकित्सक होता है। उसमें इन्द्रियों का संयम और एकाग्रता आती है और प्रज्ञा की अभिवृद्धि होती है। स्वाध्याय आर्यों के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में कहा कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इसलिए कहा जाता है कि – 'स्वाध्यायान्मा प्रमदः।'

प्राचीनकाल से श्रावणी पर्व की विशेष महत्ता रही है। वर्षा ऋतु में वेद पाठ, धर्मोपदेश तथा ज्ञान चर्चा का विशेष आयोजन किया जाता था। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। वर्षाकाल में कृषि का कार्य श्रावण मास तक समाप्त हो जाता था तथा वर्षा के कारण व्यापार आदि के कार्य भी मन्द पड़ जाते थे। नदी–नाले वारिश के पानी से भर जाते थे तथा मार्ग अवरूद्ध हो जाता था। इसी कारण ऋषि, मुनि, संन्यासी और विद्वान् लोग वर्षा के कारण अरण्य और वनों में स्थित आश्रमों को छोड़कर ग्रामों में आकर रहने लगते थे और फिर वहीं वेदाध्ययन, धर्मोपदेश तथा ज्ञानचर्चा में यह चातुर्मास बिताया जाता था। गाँव के लोग विद्वानों की सेवा–सुश्रुसा करते थे और उनसे ज्ञान प्राप्त करते थे। चातुर्मास समाप्त होने के बाद ऋषियों, मुनियों तथा विद्वानों को विदा करते समय उनको वस्त्र, अनाज तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ भेंट की जाती थी तथा उनका आभार व्यक्त किया जाता था। इसीलिए यह समय ऋषि तर्पण के लिए भी उपयुक्त होता है। वेदाध्ययन का कार्य श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को आरम्भ किया जाता है। अतः इसे श्रावणी उपाकर्म कहा जाता है। प्राचीनकाल में वेदों तथा आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय का विशेष प्रचलन था लेकिन आज वेदों के पठन–पाठन और स्वाध्याय में काफी शिथिलता आ गई है। विद्वान तो हैं लेकिन श्रोताओं का अभाव होता जा रहा है। लोगों की स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति समाप्त होती जा रही है। परिणामस्वरूप तथाकथित सन्तों, बाबाओं तथा स्वघोषित भगवानों ने पाखण्ड तथा अन्धविश्वासों को बढ़ावा देना प्रारम्भ कर दिया। अनेकों प्रकार के अन्धविश्वास और चमत्कार जन्म ले रहे हैं और भोली–भाली, सीधी–साधी धर्मभीरू आम जनता को लूटा जा रहा है, उन्हें वेद विरुद्ध पाखण्डयुक्त विचारों से दिग्भ्रमित किया जाता है। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि हमारे राजनेता बड़े उद्योगपति, अभिनेता तथा समाज के प्रतिष्ठित लोग भी आज धार्मिक अन्धविश्वास और पाखण्ड को बढ़ावा देने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। दूरदर्शन और रेडियो आदि तो पहले से ही पाखण्ड और अन्धविश्वास से सराबोर कार्यक्रमों को दिखाने में अग्रणी भूमिका निभा रहे थे अतः अन्धविश्वास का सर्वत्र बोलबाला होता जा रहा है। यह सब स्वाध्याय की कमी के कारण हो रहा है। यदि जन–साधारण में स्वाध्याय की प्रवृत्ति जागृत हो जाये तो समाज में फैले पाखण्डों और अन्धविश्वास को रोका जा सकता है।

श्रावणी पूर्णिमा का दिन वस्तुतः व्रत धारण करने का पर्व है। इस दिन पहले सामूहिक यज्ञ में यज्ञोपवीत परिवर्तित किये जाते हैं और इसी दिन वेदाध्ययन का शुभारम्भ किया जाता है। गुरुकुलों में नये ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार भी श्रावणी के अवसर पर किया जाता है। यज्ञोपवीत पहनने से व्यक्ति को यज्ञाधिकार मिलता था। भाव यही होता था कि जो व्रत, संकल्प यज्ञमय जीवन जीने के लिए हैं उसका नवीनीकरण हो एवं भाव तथा भावना दृढ़ बनी रहे। यज्ञोपवीत के तीन सूत्र केवल तीन धागे मात्र नहीं हैं। उनके माध्यम से व्यक्ति ज्ञान, कर्म और उपासना की प्रेरणा प्राप्त करता है। ये तीन धागे दीर्घायु, बल और तेज रूपी गुणों को प्राप्त करने की प्रेरणा देने तथा यह सत, रज और तम के तीनों गुणों को स्मरण कर उनके अनुरूप जीवन को उन्नत बनाने के सूत्र है। ये तीन धागे मनुष्य के ऊपर तीन ऋणों का ध्यान दिलाते हैं। ये तीन ऋण हैं पितृ ऋण, ऋषि ऋण और देव ऋण। इन तीनों ऋणों से उऋण होने का संकल्प कमजोर न पड़े, इसके लिए यज्ञोपवीत के ये तीनों धागे सदैव स्मरण कराते रहते हैं।

हमारे समस्त पर्व व्रतों के पालन के साथ–साथ समाज के उपेक्षित, पीड़ित तथा समाज में समरसता स्थापित करने के प्रति अपने दायित्व का स्मरण भी कराते हैं। वर्तमान में केवल आर्य समाज ही है जो इन श्रेष्ठ परम्पराओं को जीवित रखे हुए है। सारे देश में श्रावणी पर्व से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। बड़े–बड़े यज्ञ किये जाते हैं और वेदों का प्रचार–प्रसार किया जाता है। इनमें बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी लोग सम्मिलित होकर लाभ उठाते हैं। इन कार्यक्रमों में जन्मना जाति, स्त्री–पुरुष तथा गरीब–अमीर आदि के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव दिखाई नहीं देता। समाज के सभी लोग जो पर्व में सम्मिलित होना चाहते हैं उन सबके लिए आर्य समाज

शेष पृष्ठ 2 पर

ओ३म्

आज सारे देश में कोरोना का संक्रमण काल चल रहा है। इन परिस्थितियों में वेद प्रचार का कार्य किसी भी प्रकार से शिथिल न हो इसके लिए हमें स्वयं रास्ता ढूंढ़ना है। अपने आपको सुरक्षित रखते हुए तथा सरकार द्वारा निर्देषित नियमों का पालन करते हुए हम अपने कार्यक्रमों के द्वारा किस प्रकार से वेद का प्रचार और प्रसार तथा आर्य समाज की मान्यताओं को प्रचारित और प्रसारित कर सकते हैं ये हमें ही सोचना है। वर्तमान समय में वैदिक धर्म प्रचार के लिए टी.वी. तथा इलेक्ट्रानिक माध्यमों का सहारा लेकर पर्याप्त कार्य किया जा सकता है। टी.वी. तथा मोबाइल का प्रयोग बुद्धिजीवी तथा श्रमजीवी समान रूप से करते हैं। आज हर घर में टी.वी. तथा हर हाथ में मोबाइल है। इनके माध्यम से हम आम जनता को वैदिक धर्म की विशेषताओं के बारे में बता सकते हैं। टी.वी. पर वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के कार्यक्रम दिये जा सकते हैं। आज के युग में इण्टरनेट प्रभावशाली प्रचार माध्यम है। समृद्ध आर्य समाजें तथा आर्य प्रतिनिधि सभाएं, कम्प्यूटर आदि क्रय करके ई–मेल के माध्यम से तथा अन्य साधनों से प्रभावी कार्य योजना बना सकते हैं। टी.वी. पर प्रचार मंहगा जरूर है परन्तु प्रभावी तथा दूरगामी है। इसके माध्यम से हम वेद वाणी घर–घर पहुँचा सकते हैं। वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से हम गोष्ठियाँ, वेदकथा तथा आर्य समाज से सम्बन्धित कार्यक्रम आयोजित कर सकते हैं। अधिक से अधिक व्यक्तियों को जोड़कर और क्षेत्र के प्रतिष्ठित, बुद्धिजीवी तथा गणमान्य व्यक्तियों को अपने इन कार्यक्रमों में शामिल करके हम अधिकाधिक लोगों तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं। अपने विद्वानों तथा भजनोपदेशकों को आमंत्रित कर इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करके जहाँ हम उनके ज्ञान से लाभ उठा सकते हैं वहीं उनके सहयोगी भी बन सकते हैं। इस कोरोना संक्रमण काल में सामूहिक कार्यक्रम आयोजित नहीं किये जा सकते। अतः उपर्लिखित माध्यमों से विभिन्न आकर्षक कार्यक्रम आयोजित करके हम श्रावणी से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व तक वेद प्रचार की अपनी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रख सकते हैं। हमारा वेद प्रचार का कार्य किसी भी परिस्थिति में शिथिल न होने पाये इसके लिए हमें प्राणपण से कार्य करना होगा।

ओ३म्

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेदों में सदाचार

– डॉ. सविता सचदेवा

वेद भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। यह मानव जाति के लिए अद्वितीय मार्गदर्शक एवं सर्वोत्कृष्ट आचार संहिता हैं। मनुष्य को सफल एवं सुन्दर जीवन जीने की कला भी वेदों से ही मिलती हैं। वैदिक संस्कृति का मूल चारित्रिक श्रेष्ठता हैं, चारित्रिक श्रेष्ठता का आधार सदाचार है। सदाचार का अर्थ है – अच्छा आचरण अच्छा व्यवहार। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है, मनुष्य के जैसे विचार होते हैं वैसा ही वह आचरण करता है। क्योंकि विचारों से ही आचरण बनता है, जिसे चरित्र कहते हैं, चरित्र ही विचारों का दूसरा नाम है। सद्व्यवहार को हम मानसिक, वाचिक और शारीरिक तीन प्रकार से बांट सकते हैं। वेदों में मन में शुद्ध संकल्प एवं पवित्र भावनाओं के उदय के लिए प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि निपुण सारथी जैसे रास द्वारा घोड़ों को चलने के लिए बार-बार प्रेरित करता है और नियन्त्रित करता है वैसे ही मनुष्यों को अच्छे कार्यों में प्रेरित करने वाला मेरा जो मन है वह शुद्ध तथा पवित्र संकल्प वाला हो।' ऋग्वेद में भी भगवान् से मन को कल्याण मार्ग पर चलने की प्रार्थना की गई है। मन नियन्त्रण से जीवन में संयम, मर्यादा आदि सद्गुणों की उत्पत्ति होती है। अथर्ववेद में भी सर्वकल्याण की भावना दर्शायी गई है।

यदि मन को बुरे विचारों से हटाना है तो उसके स्थान पर अच्छे विचारों को स्थापित करना होगा यदि ऐसा न किया गया तो बुरे विचार मनुष्य पर हावी हो जायेंगे। इसीलिए वेद भक्त कहता है कि मुझे तो अवकाश ही नहीं कि मैं पाप का चिन्तन कर सकूं। सुन्दर विचार मन में आने से स्वार्थ, दुराचार, लोभ, मद-मत्सर क्रोध आदि आसुरी वृत्तियाँ उसी प्रकार नष्ट हो जाती हैं जिस प्रकार सुवर्ण का मैल अग्नि के सम्पर्क से जलकर भस्म हो जाता है।

सद्वृत्त में दूसरा मानवता का लक्षण वाक्-संयम है। वाणी की उत्कृष्टता एवं निकृष्टता से ही व्यक्ति पहचाना जाता है। श्रीमद्भगवद्गीता में तीन प्रकार के तप गिनाये हैं – शारीरिक, वाचिक और मानसिक। उद्वेग न उत्पन्न करने वाला प्रिय हितकारक और सत्यवचन बोलना, स्वाध्याय वाणी का तप कहलाता है। वाणी गुण हैं मधुर बोलना, प्रेमपूर्वक, सत्य और सोच समझकर बोलना। वेदों में मधुर और हितकर वचनों की महत्ता को दर्शाया गया है। ऋग्वेद में कहा है जिस प्रकार छलनी से छानकर सत्तू को साफ करते हैं वैसे ही जो लोग मन, बुद्धि अथवा ज्ञान की छलनी में छानकर वाणी का मधुर प्रयोग करते हैं वे हित की बातों को समझते हैं। जो लोग बुद्धि से शुद्धकर वचन बोलते हैं वे अपने हित को भी तथा जिसको बात बता रहे हैं उसके हित को भी समझते हैं।

मधुरता से कही गई बात हर प्रकार से कल्याणकारी होती है परन्तु वही बात अगर कठोर और कटु शब्दों से बोली जाये तो एक बड़े अनर्थ का कारण बन जाती है। मनु ने वाणी के कटुवचन, झूठ चुगली एवं असम्बद्ध प्रलाप चार दोषों को गिनाया है। वेदों में कहा गया है कि मनुष्य को इन चार दोषों से सदैव दूर रहना चाहिए। और मधुर वचन बोलने चाहिए। अथर्ववेद में कहा है मेरी जिह्वा के सिरे पर मधुर रस होवे, जिह्वा के मूल में मधुर रस होवे, मेरे कर्म और बुद्धि में भी अवश्य तूँ रह, माधुर्य मेरे चित्त में पहुँचे। मेरा आना-जाना मधुर हो, मैं सदा मीठी वाणी बोलूं और मैं मधुर रूप वाला रहूँ।

यजुर्वेद में भी वाणी को कामधेनु कहा है जो हमारी सारी इच्छाओं को पूर्ण करती है। वाणी ही भावों और विचारों को प्रकट करने का अद्वितीय साधन है और वाणी द्वारा ही भावों और विचारों का विसर्जन किया जाता है। वाणी विचार दान करने वाली है। वाणी द्वारा मनुष्यों को मधुर और शालीन शब्दों का प्रयोग करना चाहिए। सत्य वाणी का आभूषण है सत्य-भाषण से ही समाज में मनुष्य का सम्मान बढ़ता है। यजुर्वेद में प्रजापति ब्रह्मा द्वारा सत्य को स्वीकारा गया है, सत्य में ही श्रद्धा को स्थापित किया गया है। तैत्तिरीयोपनिषद् में सत्य बोलने पर बल दिया है। असत्य से सत्य की ओर चलना चाहिए। सत्य अर्थात् जो सदा है, सतत है, निरन्तर है।

मधुरता से कही गई बात हर प्रकार से कल्याणकारी होती है परन्तु वही बात अगर कठोर और कटु शब्दों से बोली जाये तो एक बड़े अनर्थ का कारण बन जाती है। मनु ने वाणी के कटुवचन, झूठ चुगली एवं असम्बद्ध प्रलाप चार दोषों को गिनाया है। वेदों में कहा गया है कि मनुष्य को इन चार दोषों से सदैव दूर रहना चाहिए। और मधुर वचन बोलने चाहिए। अथर्ववेद में कहा है मेरी जिह्वा के सिरे पर मधुर रस होवे, जिह्वा के मूल में मधुर रस होवे, मेरे कर्म और बुद्धि में भी अवश्य तूँ रह, माधुर्य मेरे चित्त में पहुँचे। मेरा आना-जाना मधुर हो, मैं सदा मीठी वाणी बोलूं और मैं मधुर रूप वाला रहूँ।

वाणी के संयम के पश्चात् शरीर का स्थान है। शरीर का तप है सत्य का आचरण। अहिंसा, अद्वेष, शारीरिक श्रम, दूसरों की सेवा करना, चोरी न करना। वेदों में केवल मानव का मानव के प्रति सद्व्यवहार या आचरण का ही उपदेश नहीं है, अपितु प्राणी के प्रति प्रेमपूर्वक एवं अहिंसक व्यवहार का उपदेश भी है। वैदिक संस्कृति सदाचार को जितना महत्त्व देती है उतना अन्य उपादानों को नहीं। वेद का कथन है कि दुराचारी व्यक्ति ऋतु के मार्ग को पार नहीं कर सकता। देवयान मार्ग सदाचारी व्यक्ति के लिए है। अतएव साधक प्रार्थना करता है। हे अग्ने! मुझे दुश्चरित से पृथक करो और सब ओर से सदाचार का भागी बनाओ।

अथर्ववेद में सद्व्यवहार को सत्याश्रित कहा गया है। सत्य में ही तप का वास है, सत्य कोई ऐसी वस्तु नहीं जो बाहर से प्राप्त हो। सत्य एक प्रतीति है अनुभूति है जो आचरण के माध्यम से स्वयं में जागृत की जा सकती है। अतः सत्य ही भूमि का आधार है। भूमिसूक्त में भी पृथ्वी को धारण करने वाले पदार्थों में सर्वप्रथम सत्य का ही परिगणन किया गया है।

सत्य का अन्वेषक ही अहिंसा का प्रेमी होता है। वेद ने जहां मनुष्य समाज को अहिंसापूर्वक रहने की प्रेरणा दी है वहां तीन परिस्थितियों में हिंसा का विधान भी किया है। वह है बाह्य आक्रमण, असमाजिक तत्वों का दमन और भयंकर विषैले जन्तुओं का नाश। अथर्ववेद में प्रार्थना की गई है, कि हे इन्द्र हमारे बाह्य शत्रुओं को मार डाल और सेना लेकर चढ़ाई करने वालों को नीचे रोक दें और जो लाभदायक जीव जन्तु हैं वेद उन्हें पालने की शिक्षा देता है। मन से किसी का अहित चिन्तन न करना, वाणी से किसी को दुःखी न करना और शरीर से किसी को पीड़ा न पहुँचाना यही अहिंसा कहलाती है। वेद ने कहा है कि हम दानी, अहिंसक और ज्ञानी व्यक्ति का संग करें।

अहिंसा के साथ-साथ वेद ने यह भी कहा है कि मनुष्य के मन में द्वेष की भावना नहीं होनी चाहिए। अथर्ववेद में कहा है कि सभी एक मन से रहें परस्पर द्वेष न करें। एक दूसरे से ऐसे प्रेम करें जैसे नवप्रसूता गाय अपने बछड़े से दुलार करती है।

वेद ने ईश्वर को पिता धरती को माता और धरती के सारे मनुष्यों को एक परिवार मानकर सबको प्रेमपूर्वक रहने की प्रेरणा दी है। प्रेम ईश्वर से समन्वय करवाता है। प्रेम एक ऐसी अग्नि है जिससे ईर्ष्या, घृणा और वैमनस्य सब जलकर राख हो जाते हैं। प्रेम का प्रथम रूप ईश्वर-प्रेम के रूप में हमारे सम्मुख आता है। वेद ने कहा है कि हम ईश्वर से प्रेम करें। और सबसे मित्रता का भाव रखें। अथर्ववेद में कहा है कि आपसी सहयोग, प्रेम और मधुर शब्दों के साथ लोगों से व्यवहार करने वाला व्यक्ति ही भ्रातृत्व-प्रेम को स्थापित कर सकता है।

अस्तेय अर्थात् चोरी न करना। चोरी की भावना मनुष्य के बहुत बड़े पतन का कारण होती है। चोरी मनुष्य तभी करता है जब वह परिश्रम किये बगैर पदार्थों की प्राप्ति की लालसा करता है या वह बेरोजगार हो और उसकी इच्छा की पूर्ति न हो। ऋग्वेद में इस बात पर बल दिया है कि मनुष्य को परिश्रम करना चाहिए और चोरों को दण्ड दें तथा शिक्षा दें और उनमें से चोरी की भावना दूर करनी चाहिए। वेद में आदेश दिया गया है कि मनुष्य को अपनी कमाई खानी चाहिए दूसरों की कमाई खाना ऋणी होना है –

'स्वयं वाजिस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व। महिमा ते अन्येन न सन्नशे।'

योगीराज पतञ्जलि ने भी कहा है – अस्तेय की प्रतिष्ठा होने पर सब रत्न अर्थात् उत्तम से उत्तम पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं।

अतः वेद ईश्वर की वह वाणी है जिसके बताये गये मार्ग पर चलकर हम आत्मोन्नति के पथ पर चल सकते हैं और अपना जीवन सफल कर सकते हैं।

– सरकारी कालेज स्त्रियाँ, अमृतसर

पृष्ठ 1 का शेष

स्वाध्याय पर्व श्रावणी का महात्म्य

के द्वार हमेशा खुले रहते हैं। यहाँ पर यह स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है कि अनेक पौराणिक कथित विद्वान समय-समय पर महिलाओं तथा शूद्रों को वेद मन्त्र बोलने व सुनने को अपराध एवं पाप घोषित करते रहते हैं, जो कि वेद विरुद्ध मानसिकता का द्योतक है। वेद ज्ञान को प्राप्त करने का अधिकार मनुष्य मात्र के लिए है ऐसा आर्य समाज मानता है। क्योंकि वेद में आया है कि – 'यथेमां वाचम् कल्याणी मा वदानि जनेभ्यः।' अर्थात् ईश्वर की कल्याणी वाणी को सुनने और बोलने का सब मनुष्यों को अधिकार है। इसके साथ ही श्रावणी पर्व के महत्त्व को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया जाता है। वेद की शिक्षाओं के द्वारा सच्चे अर्थों में मानव बनने का मार्ग प्रशस्त किया जाता है तथा समाज को सुखी, शान्त एवं आनन्दित बनाये रखने के सूत्र बताये जाते हैं।

व्यक्ति, समाज, परिवार, राष्ट्र तथा विश्व वेदानुयायी बनकर ही सुख, शांति और समृद्धि को प्राप्त कर सकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपना कोई अलग सम्प्रदाय न चलाकर लोगों को एक ही सत् परामर्श दिया कि वेदों की ओर लौटो! अतः अज्ञानान्धकार का निराकरण करने के लिए वेदों का स्वाध्याय नितान्त अनिवार्य है।

श्रावणी के दिन ही भाई-बहन के पवित्र प्रेम का पर्व रक्षाबन्धन भी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में बहन अपने भाई की कलाई में रक्षा सूत्र बाँधकर अपनी रक्षा का वचन लेती है। लेकिन इस त्योहार का श्रावणी पर्व से कोई सम्बन्ध नहीं है। प्राचीनकाल में इस प्रकार के किसी पर्व का उल्लेख नहीं मिलता है। देश की परतन्त्रता के समय कुछ ऐतिहासिक घटनाओं को जोड़कर इस त्योहार को मनाने का प्रचलन हो गया जो आज पूरे देश में श्रावणी के दिन मनाया जाता है। इसी दिन संस्कृत दिवस भी मनाने का प्रचलन है। हमारे देश में सभी वेद, शास्त्र तथा प्रमुख ग्रन्थ संस्कृत में ही हैं। अतः संस्कृत को बढ़ावा देना समीचीन है। क्योंकि जब तक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त नहीं किया जायेगा तब तक हम अपने वैदिक ग्रन्थों और वेदादि शास्त्रों को समझने में सक्षम नहीं हो सकते। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बच्चों को प्रारम्भ से ही संस्कृत पढ़ायें और उनको संस्कृत का पूर्ण ज्ञान करायें। हमारे गुरुकुल इस कार्य को भली-भांति कर भी रहे हैं। हमें श्रावणी के अवसर पर यह भी संकल्प लेना चाहिए कि संस्कृत को प्रतिष्ठित करने, आगे बढ़ाने और सुरक्षित रखने के लिए कृत-संकल्प अपने गुरुकुलों को दिल खोलकर दान देकर सहयोग करें। इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह में शहीद हुए आर्यों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की जाती है।

हमारा वेद प्रचार करने का उद्देश्य यही होना चाहिए कि हम जीवन की पगडण्डी पर चलते-चलते अचानक जिन झाड़-झंखाड़ों में उलझ गये हैं उससे निकलने के लिए वेद ज्ञान को व्यवहारिकता में लायें। चाहे व्यक्तिगत हो, परिवार, समाज तथा देश की हो सभी समस्याओं का समाधान हमें वेद से मिल सकता है। क्योंकि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद हमें सत्य की कसौटी पर रहकर जीना सिखाता है। आज इस बात की परम आवश्यकता है कि मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करने के लिए एक सामूहिक सोच का विकास किया जाये जो वेद के आधार पर ही हो सकती है। क्योंकि वेद पूर्णतया सार्वभौमिक और परमात्मा की सत्य वाणी है।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह 1939 की स्मृति

आर्य समाज का विजय पर्व

भारतीय संघ में हैदराबाद राज्य का विलीनीकरण और आर्य समाज की भूमिका

– मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

वेद के अनुयायी और उसके प्रचारकों को सदैव ही संघर्ष करना पड़ा। इसी संघर्ष की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी 'हैदराबाद आर्य सत्याग्रह' (1939) है। कतिपय विद्वान् इस महान् एवं सफल सत्याग्रह को ''हैदराबाद में धर्मयुद्ध'' नामक संज्ञा से भी सम्बोधित करते हैं। वस्तुतः यह हमारे गौरवपूर्ण इतिहास का अति महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसे पढ़कर हमारी आने वाली पीढ़ी गर्व से आत्माभिमान अनुभव करेगी।

हैदराबाद (तत्कालीन दक्षिण) आर्य सत्याग्रह वस्तुतः एक युद्ध था जिसे हैदराबाद राज्य में आर्य समाज के अधिकारों और वैदिक धर्म के प्रचार स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिए लड़ा गया था। प्रामाणिक तथ्यों के अनुसार आर्य समाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली द्वारा निरन्तर छः वर्ष तक वैध उपायों से इस समस्या के हल का प्रयत्न किया गया था, किन्तु जब ये सारे उपाय निष्फल हो गए, तब निजाम सरकार ने आर्य समाज को सत्याग्रह करने के लिए बाध्य कर दिया।

आर्य समाज के इस निर्णय से अन्य राजनैतिक दलों तथा साम्प्रदायिक संस्थाओं को बहुत पीड़ा हुई। इन्हें अपना नेतृत्व छिन जाने की वेदना सताने लगी। इस कारण आर्य समाज के इस सत्याग्रह को साम्प्रदायिकता का आवरण देने का असफल प्रयास किया। यह कटु सत्य है कि तुष्टीकरण ही इस देश के विभाजन का एक मात्र कारण सिद्ध हो चुका है। सत्यमेव जयते नानृतम्' और असत्यमेव न जयते' के मूल सिद्धान्त को मानने वाले उस आर्य समाज के सम्मुख न तो तुष्टीकरण रूपी नाग अपना फन ऊँचा कर पाया और न गिरगिट की तरह रंग बदलने वाली कुटिल चाल ही सफल हुई। इतना ही नहीं इन्हीं तत्वों के कारण आर्य समाज के प्रति लोगों की सहानुभूति को घटाने के स्थान पर बढ़ाया ही। आर्य समाज के नेताओं ने प्रारम्भ से ही इस बात को स्पष्ट कर दिया था कि यदि किसी हिन्दू राज्य में आर्य समाज पर इसी प्रकार की आपत्ति आती है जिस प्रकार की निजाम राज्य में आई थी, तो वे वहां भी इसी उपाय अर्थात् सत्याग्रह धर्म युद्ध का आश्रय लेते आर्य समाज की घोषणा ने समाज और राष्ट्र के सम्मुख एक स्पष्ट और स्वच्छ विशाल मार्ग प्रस्तुत कर दिया। आर्य समाज ने दाहिने हाथ से कर्म किया और बाएं हाथ में विजय श्री अपनी शोभा बढ़ाने लगी।

हां, जब आर्य समाज की सामनीति जब छः वर्ष पश्चात् भी सफल न हुई तब भी आर्य समाज निराश न हुआ। उन्होंने सर्वप्रथम समस्त आर्य जगत् की सम्मति ज्ञात करने के लिए दिसम्बर, 1938 के अन्तिम सप्ताह में शोलापुर में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन इस 'नीति' के अनुसार था कि सम्भवतः निजाम सरकार के रवैऐ से आर्य समाज को सत्याग्रह न करना पड़े, किन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ और उस निजाम की पूंछ पूर्ववत् टेढ़ी ही रही। अन्ततः आर्य सम्मेलन शोलापुर को अपने समस्त निश्चयों के अनुसार सत्याग्रह की घोषणा करना पड़ी। इसके सर्वप्रथम सर्वाधिकारी श्री महात्मा नारायण स्वामी जी बनाए गए। इन समस्त निश्चयों में निश्चय क्र. 3 में स्पष्ट कहा गया था - 'राज्य अथवा कर्मचारियों को न तो तबलीग शुद्धि मतान्तरण में भाग चाहिए न उसे प्रोत्साहन करना चाहिए। न जेलों में हिन्दू कैदियों तथा स्कूलों में हिन्दू बच्चों को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ, मुसलमानों के सुपुर्द किए जाने चाहिए।'' (सन्दर्भ - आर्य डायरेक्टरी, 1942, प्र. 213)

इस विशाल सत्याग्रह के संचालन हेतु 'सत्याग्रह समिति' नियत की गई। चूंकि इस आन्दोलन के सम्बन्ध में मिथ्या और भ्रमपूर्ण बातें फैलाई जा रही थीं, इसलिए उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यावश्यक कहा गया।

धर्म युद्ध की प्रथम आहुति

- निश्चयानुसार पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने दिनांक 29 अगस्त, 1939 को कतिपय सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद राज्य में प्रवेश किया। उन्हें प्रथमतः पकड़कर पुलिस निजाम राज्य के बाहर कर गई। किन्तु जब स्वामी जी ने पुनः वहां जाकर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया, तब उन्हें पकड़कर एक साल के कारावास का दण्ड दिया गया। बस फिर क्या था, दावानल की भांति पूरे देश में जोश फैल गया और जनता बड़े से बड़े त्याग के लिए तैयार हो गई। आर्य समाज भी अंगड़ाई लेकर युद्ध के लिए ताल ठोंककर तैयार हो गया। सत्याग्रह के रहस्य को समझकर मार्च, 1939 में निजाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा प्रारम्भ हुई, किन्तु 9 अप्रैल, 1939 में शोलापुर में अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक हुई। इधर निजाम सरकार पीछे हट गई, इस कारण इसमें कोई विशेष गति नहीं आई।

उधर निजाम सरकार का दमन चक्र प्रबलता से घूमने लगा। ज्यों-ज्यों दमन चक्र बढ़ने लगा, त्यों-त्यों सत्याग्रह में उग्रता और तीव्रता बढ़ने लगी। इधर तुष्टीकरण की नीति वाले दलों ने इसके सम्बन्ध में अनेक भ्रांतियां फैलाना शुरू कर दीं। किन्तु जनता ने आर्य समाज की न्याय प्रियता, सत्यतापरक अहिंसा के मूल्य का आकलन करना शुरू किया, इस कारण 'तुष्टीकरण' की कुचालें निष्प्रभावी हो गई। अब इस धर्म युद्ध ने और भी व्यापकता प्रकट कर ली। कहते हैं - यह युद्ध इतना व्यापक और इतना प्रसिद्ध हो गया था कि उन दिनों देश की सार्वजनिक हलचलों में इसके सिवा और कोई हलचल सर्वोपरि न थी। सभी भाषायी तथा आंग्ल पत्रों में इस युद्ध के अतिरिक्त कोई चर्चा न थी। यह ध्यान रखने का तथ्य है कि देश के अग्रणियों की चिन्ता का कोई विषय था तो केवल यह युद्ध था।

यह युद्ध और इसकी चर्चा भारत की सीमा तक ही सीमित न रही वरन् समुद्र पार पार्लियामेण्ट के भवनों तक जा पहुंची।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की आज्ञाओं और निर्देशों को आर्यजनता ने बड़ी तत्परता और सम्मान के साथ ग्रहण किया। यह एक ऐतिहासिक वस्तु बन गई। जब युद्ध अपने चरम पर था, उस समय 2,000 सत्याग्रही शिविरों में पड़े हुए आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनमें हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान तथा ईसाई बन्धु थे। हमारे अनुशासन एवं संयम की सभी आंग्ल पत्र तथा भाषायी पत्र भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। विशेषकर हिन्दू जनता ने आर्य समाज की विपत्ति को अपनी विपत्ति समझा और उसके निवारणार्थ उन्होंने आर्य समाज तथा आर्य समाजियों के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाया और ऐसा कौन सा त्याग था जो उसने इस अवसर पर न किया हो।

'असत्यमेव न जयते' के अनुसार आर्य समाज रूपी श्रीकृष्ण का पांचजन्य शंख एक बार पुनः ध्वनित हो उठा और उसने विजय की घोषणा की। निजाम सरकार ने आर्य समाज के इस सत्याग्रह के सम्मुख घुटने टेक दिए और उसने 'सुधारों' की घोषणा की। यह घोषणा 20 जुलाई सन् 1939 को की थी। इसके पूर्व दिनांक 17 जुलाई, 1939 को निजाम सरकार ने अपना निर्णय प्रकट कर दिया था।

इस सत्याग्रह में कुल 10,579 सत्याग्रही जेल गए थे। इसके अतिरिक्त 2,000 सत्याग्रही वे थे जो 8-8-1939 से पूर्व केन्द्रों में पहुंच गए थे और आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इस प्रकार आर्य समाज द्वारा छेड़ा गया यह धर्म युद्ध जो कि अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरूद्ध प्रारम्भ हुआ था, परमात्मा की कृपा सत्याग्रहियों के तप-त्याग तथा महान बलिदानियों के कारण सुखद अन्त के रूप में विजय श्री को प्राप्त कर सका। इन सभी श्रेष्ठ आत्माओं के प्रति आभार तथा प्रणाम।

- 'सुकिरण' अ-193, सुदामानगर, इन्दौर, (मध्य प्रदेश)

हैदराबाद के आर्य शहीदों को

श्रद्धांजलि

श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं हम, करके उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्होंने निज बलिदान।।
परिवारों के सुख को त्यागा, देश के अनेकों वीरों ने।।
कष्ट अनेकों सहन किए, पर धर्म न छोड़ा वीरों ने।।
ऐसे सभी धर्मवीरों के आगे शीश झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुणगान को, हम निज जीवन में लाते हैं।।
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से।
उनका स्मरण बनायेगा फिर वीर जाति को निश्चय से।।
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हो वीर।
धर्म देश हित जोकि खुशी से प्राणों की आहुति दे वीर।।
जगदीश को साक्षी जान कर यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर चलने का व्रत करते हैं।।
सर्व शक्ति दे बल ऐसा, धीर-वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निश दिन शुभ गुणकारी आर्य बनें।।

धर्मवीर नामावली

श्यामलाल जी, महादेव जी, राम जी श्री परमानन्द।
माधवराव, विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द।।
स्वामी सत्यानन्द, महाशय मलखाना, श्री वेदप्रकाश।
धर्म प्रकाश, रामनाथ जी पांडुरंग, श्री शान्ति प्रकाश।।
पुरुषोत्तम जी, ज्ञानी लक्ष्मण राव, सुनेहरा वैंकटराव।
भक्त अरुणाराम जी, नन्हूं सिंह जी, गोविन्द राव।।
मदन सिंह जी, रतिराम जी, मान्य सदाशिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटेलाल, अशर्फीलाल तथा श्री फकीर चन्द।।
माणिकराव, भीमरावजी, महादेव जी, अर्जुनसिंह।
सत्यनारायण, वैजनाथ, ब्रह्मचारी दयानन्द, नरसिंह।।
राधाकृष्ण सरीखे निर्भय अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन सब ही वीरों धीरों का।।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान्
पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री जी का असामयिक निधन

प्रसिद्ध उपदेशक तथा स्वतन्त्र प्रचारक श्री कमलेश कुमार अग्निहोत्री जी का 25 जुलाई, 2020 (शनिवार) को प्रातःकाल उनके निवास स्थान किशनगढ़, अजमेर में असामयिक निधन हो गया। श्री कमलेश कुमार जी का बचपन हरियाणा के फिरोजपुर झिरका के समीप एक गाँव के अत्यन्त साधारण परिवार में बीता। उनकी उत्कट इच्छाशक्ति तथा स्वाध्याय ने उनको आर्य समाज का सफल उपदेशक बना दिया था। उन्होंने देश के विभिन्न भागों हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार आदि क्षेत्रों में आर्य समाज का प्रचार कार्य करके आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवा की है।

उन्होंने सैजपुर बोधा आर्य समाज में पौरोहित्य कर्म करते हुए काफी समय बिताया। सादा जीवन उच्च विचार तथा हसमुँख प्रवृत्ति से युक्त श्री कमलेश कुमार जी काफी मिलनसार व्यक्ति थे, जिसके कारण उन्हें लोग अत्यधिक पसन्द करते थे। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में उनके लेख यदा–कदा प्रकाशित होते रहते थे। उन्होंने कई पुस्तकें भी लिखीं। श्री कमलेश कुमार जी के निधन से आर्य समाज को गहरा धक्का लगा है। सार्वदेशिक सभा परिवार उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी सद्गति की प्रार्थना करता है।

।।ओ३म्।।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य
(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)
(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

मात्र 3100/– में

एक वेद सैट मात्र 3100/– रुपये में उपलब्ध है।

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर
लागत मूल्य में 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 300/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।
अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 • दूरभाष :– 011–23274771

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।